❑ रामकुमार कृषक

इन कविताओं में बस्ते के बोझ से दबे बच्चे के सामने सूचनाओं का ढेर है जिसमें से गुजर कर उसे भविष्य का रास्ता बनाना है । यहां दृश्य मीडिया के आतंक के बीच टिकी किताब से जुड़ी आश्वस्ति है कि यह आने वाले समय में भी ज्ञान और संवेदना की वाहक बनी रहेगी ।

बस्तों की जगह

लौट आए हैं बच्चे
फेंक दिए हैं बस्ते बिस्तरों पर
जा घुसे हैं रसोईघर में
खेलने निकल जायेंगे इसके बाद

लौट आएगा ट्यूटर
खा जाएगा कीमती समय
कलप रहे हैं बच्चे

केबल से जुड़ी है टेबल
टेबल से जुड़ा है टी. वी.
टी. वी. से जुड़े हैं बच्चे
बच्चों से जुड़ी है सरकार
सीख रहे हैं बच्चे
ज्ञानवृद्ध हो रहे हैं

ताक रहा है भविष्य
बस्तों की जगह आ जाएगा कंधों पर
तैयार हो रहे हैं बच्चे ।

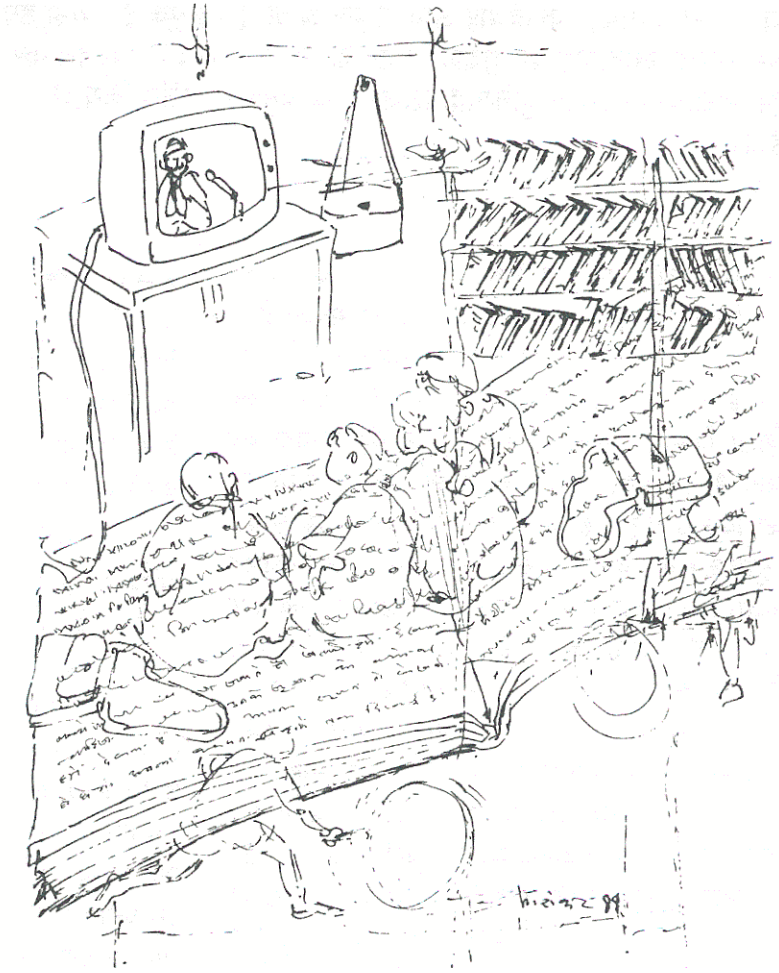

लौट आएंगी आंखें

खामोश हैं किताबें
सजी हुई शेल्फों और
शो-केसों में

क्या कुछ नहीं है संजोए हुए
अपने भीतर
अक्षरों की एक पूरी दुनिया
शब्दों के कितने ही समाज और
जमातों पर जमातें वाक्यों की
अर्थ भी होंगे ही कहीं
हृदय और मस्तिष्क
छुअन बहती हुई नदी की
हवा का स्पर्श
रंग फूलों और तितलियों के
धूंप-जैसी इच्छाएं गुनगुनी
सुगबुगाहट एक नई दुनिया की
लौट आएंगी आंखें
इंतजार कर रही हैं किताबें ◆